अनिमेष की कार जैसे ही गंगा जी में गिरी उसका फोन कट गया था।

गायत्री देवी उधर से बस चीखती चिल्लाती रह गयीं थीं । अनिमेष के एक्सीडेंट की आशंका से उनके हाथ पैर फूल गए थे । वे बुरी तरह घबरा गई थीं और उन्हें चक्कर भी आ गए थे। जिसकी वजह से
वे वही फर्श पर ही बैठ गई थीं।

थोड़ी देर तक ऐसे ही बैठी रहीं, मगर फिर उन्होंने बहुत हिम्मत करके अपने आप को संभाला । उन्होंने एक बार फिर से अनिमेष का फोन मिलाया, बार-बार मिलाया लेकिन... कोई फायदा नहीं हुआ । नंबर बंद आ रहा था ।

गायत्री देवी की समझ में नहीं आ रहा था क्या करें। तभी उन्हें ध्यान आया कि मोबाइल फोन अनिमेष के ड्राइवर मनोज के पास भी है, और उसका नंबर भी गायत्री देवी के मोबाइल में फीड था।

बस ... यह ध्यान आते ही गायत्री देवी ने तुरंत अपने फोन में से मनोज का नंबर निकाला और फोन मिला दिया।

###

मनोज अभी वहां से ज्यादा दूर नहीं निकला था। वह रोडवेज बस में एक सीट पर बैठा हुआ, घर जाने की खुशी में खुश होता हुआ जा रहा था कि तभी उसका मोबाइल की घंटी बजने लगी।

मोबाइल में गायत्री देवी का नंबर देखकर मनोज हड़बड़ा गया। सोचने लगा कि कहीं उन्हें पता तो नहीं लग गया कि वह अनिमेष को छोड़कर अपने घर जा रहा है और इसीलिए उन्होंने उसे डांटने के लिए फोन किया हो। यह सोचकर वह घबराया क्योंकि वह गायत्री देवी से बहुत डरता था । और वही क्या, गायत्री देवी से तो कंपनी का हर कर्मचारी डरता था, क्योंकि वे थीं ही इतनी सख्त मिजाज। कंपनी में सब को एकदम टाइट रखती थी।

किसी की जल्दी उनके सामने कुछ बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। और मनोज को तो उनसे कुछ ज्यादा ही डर लगता था। इसलिए वह इस समय गायत्री देवी का फोन उठाने में घबरा रहा था। और फोन उठाऊं या ना उठाऊं, यही सोच रहा था । और इसी पशोपेश में
फोन कट गया था।

मगर कटने के बाद गायत्री देवी का फोन तुरंत दोबारा आया और इस
बार मनोज ने हिम्मत करके उनका फोन उठा लिया, और सहमे स्वर में बोला - " हैलो ! नमस्कार मैडम जी ! "

मनोज यही सोच रहा था कि गायत्री देवी अब उसे फटकार लगायेंगी। मगर दूसरी तरफ से गायत्री देवी की व्यग्र और परेशान आवाज आयी-

"हैलो मनोज ! तुम कहाँ हो इस समय !

" व वो... म-मैं... तो घर जा रहा हूँ मैडम....

मनोज ने लगभग मिमियाते हुए कहा तो गायत्री देवी तुरंत उसकी बात काटते हुए व्यग्र स्वर में बोली - " वो सब छोड़ो ! यह बताओ कि इस समय तुम कहां हो ?

" मैडम जी अभी तो मैं बस हरिद्वार से निकला हूँ....

"तुरंत वापस जाओ... और अनिमेष को ढूंढकर उससे मेरी बात कराओ "

" ज-जी...? "

मनोज के मुँह से हैरान-परेशान स्वर निकला तो गायत्री देवी ने घबराए स्वर में आगे कहा-" देखो मनोज ! अभी थोड़ी देर पहले मेरी अनिमेष से बात हो रही थी फिर अचानक बड़ी जोर की आवाज आई, फिर अनिमेष के चिल्लाने की आवाज आयी और फिर फ़ोन कट गया। और तबसे उसका फोन नहीं मिल रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे ... कोई एक्सीडेंट हुआ हो...."

कहते-कहते गायत्री देवी की रुलाई फूट पड़ी थी जबकि मनोज यह सुनकर बुरी तरह उछल पड़ा था। उसके मुंह से हैरान-परेशान स्वर
निकला - " मगर ... अभी 15 मिनट पहले ही तो मैं उन्हें छोड़ कर आ रहा हूं."

"तुम अभी के अभी वापस जाओ... और अनिमेष को ढूंढकर उस से मेरी बात कराओ ..."

कहने के बाद गायत्री देवी फिरसे रोने लगी तो मनोज ने उन्हें ढाढस बंधाते हुए कहा - " परेशान मत होईये मैडम जी! मैं

अभी जाता हूं... और अनिमेष सर को ढूंढ कर उनसे आपकी बात कराता हूँ। आप चिंता मत कीजिये, अनिमेष सर को कुछ नहीं होगा !"

" जाओ! जल्दी जाओ! और अनिमेष के मिलते ही उससे मेरी बात कराना ! " कहने के बाद गायत्री देवी ने फोन काट दिया था ।

मनोज ने अब तुरंत अपने नंबर से अनिमेष का नंबर मिलाया, मगर वह बंद आ रहा था। उसने एक बार फिर ट्राई किया मगर कोई फायदा नहीं निकला ।

फिर मनोज तुरंत अपना बैग लेकर सीट से उठा और बस रुकवा कर वहीं उतर गया । फिर वह रोड पार करके दूसरी तरफ गया और वहां से हरिद्वार जाने के लिए वाहन तलाशने लगा । इत्तेफाक से उसे जल्दी ही एक खाली ऑटो वाला मिल गया। उसने तुरंत उसे बुक कर लिया और हरिद्वार की तरफ चल पड़ा। रास्ते में वह बार-बार अनिमेष का फोन मिलाये जा रहा था।

###

उधर गायत्री देवी ने अब उन लोगों को फोन किया जिनसे अनिमेष मिलने आया था । अनिमेष असल में हरिद्वार में एक रियल स्टेट प्रोजेक्ट के लिए जमीन देखने और उसकी बात करने आया था। और जिनकी वह जमीन थी, वे भी हरिद्वार के बड़े लोग थे। तो जब गायत्री देवी ने उन्हें पूरी बात बताई तो उन्होंने भी अपनी तरफ से उन्हें अनिमेष का पता लगाने का आश्वासन दिया।

मगर गायत्री देवी को इससे संतोष नहीं हुआ और उन्होंने खुद हरिद्वार जाने का फैसला कर लिया। उन्होंने अपने ड्राइवर को बुलवा लिया और साथ ही अपने ऑफिस इंचार्ज नीरज जैन को भी साथ चलने के लिए बोल दिया और खुद भी आनन-फानन में तैयार होने लगीं।

###

उधर अनिमेष की कार को टक्कर मारने के बाद उस ट्रक का ड्राइवर ट्रक को वहीं पुल पर छोड़कर भाग था। और एक्सीडेंट के बाद वह ट्रक अभी उस पुल पर ही खड़ा था । यह एक्सीडेंट कई लोगों ने अपनी आंखों से देखा था और वे इसे देखकर स्तब्ध रह गए थे।

देखते ही देखते अनिमेष की कार गंगा नदी गिरी थी और गंगा जी के अथाह जल में में बह गई थी। और थोड़ी ही देर बाद नजरों से ओझल भी हो गई थी। उसके बाद एक्सीडेंट वाली जगह पर, यानि जहाँ वह ट्रक खड़ा था, उस जगह पर कई लोग इकठ्ठा हो गये थे। और उन्हीं लोगों में से किसी ने फिर पुलिस को भी सूचना दे दी थी ।

मगर इससे पहले कि पुलिस वहां पहुंचती, मनोज अपने ऑटो में बैठकर वहां पहुंच गया था । पुल पर एक्सीडेंट हुआ ट्रक खड़ा देखकर उसने अपना ऑटो रुकवाया और पैदल ही उतर कर उसके पास गया ।

और वहां खड़े लोगों से पूछने लगा- " यह यहां क्या हुआ है भाई साहब ? क्या बात हो गयी ? "

उन लोगों में खड़े एक अधेड़ उम्र के आदमी ने बताया- "अरे भैया पूछो मत ! बहुत तगड़ा एक्सीडेंट हुआ है !"

" एक्सीडेंट ? किससे? "

मनोज ने व्यग्रता भरे स्वर में तो उसी आदमी ने आगे बताया- "अरे भैया वह एक बहुत बड़ी कार थी !"

"बहुत बड़ी कार थी ? कैसे रंग की ?"

" मनोज ने फिर से व्यग्रता भरे में पूछा वही खड़ा एक अन्य आदमी बोल पड़ा - " सफेद रंग की कार थी।"

" सफेद रंग की कार थी? तो अब कहाँ गयी ? "मनोज ने घबराये हुए स्वर में पूछा तो अब एक तीसरे आदमी ने कहा- " अरे यही तो बात
है। इस ट्रक ने उस कार के इतनी जोर से टक्कर मारी कि वह पुल की रेलिंग तोड़कर नीचे गंगा जी में जा गिरी और... बह गई।"

यह सुनकर मनोज के छक्के छूट गए, वह अविश्वास भरे स्वर में बोला - " कार बह गई ?कार नदी में बह गई ? "

"हां भैया कार गंगा जी में बह गई! " उसी आदमी ने फिर आगे कहा- " और ऐसी बही जैसे कार ना होकर कोई घास-फूस का तिनका हो ।

अब मनोज की हालत ओर खराब हो गई थी। वह बड़ी मुश्किल से खुद को संभालता हुआ बोला- " आपमें से किसी

ने देखा कि उस कार के अंदर कौन था ?"

"हां! उसके अंदर तो एक खूबसूरत, जवान लड़का बैठा हुआ था ! "
उसी आदमी ने फिर कहा तो मनोज ने उससे आगे पूछा- " आप तब कहां थे ? "

अरे मैं तो तब उनके पीछे ही इस पुल पर अपनी लूना से चल रहा था। और तब मैं उनसे थोड़ी ही दूर था जब इस ट्रक ने बहुत जोर से उसे टक्कर मारी !"

" क्या आपने उस कार का नंबर देखा था। "

" नहीं नंबर पर तो मेरा ध्यान नहीं गया !'

अच्छा तो एक बात बताइए? " मनोज ने धड़कते दिल से आगे पूछा- " उस कार के पीछे वाली स्क्रीन पर कुछ लिखा हुआ था क्या ?"

"हाँ ! उस पर लिखा था- जय माता दी ! "

उस आदमी की यह बात सुनकर मनोज का दिल बैठ गया।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए और गायत्री देवी से क्या बताया जाए ?

मगर बताना तो पड़ता ही, तो उसने अपना जी पक्का करके गायत्री देवी का फोन मिला दिया।

###

गायत्री देवी तब हरिद्वार चलने के लिए तैयार हो चुकी थी और वे वहां से निकलने वाली थी। कि तभी मनोज का फोन उनके पर आ गया ।
और मनोज ने जैसे ही उन्हें वह घटना बतायी, गायत्री देवी को एक बार फिर बहुत तगड़ा झटका लगा । जब उन्हें पता लगा कि अनिमेष की कार का इतना भयंकर एक्सीडेंट हुआ है और उसकी कार उसके साथ गंगा नदी मैं बह गई है तो उनके दिल में दर्द की एक लहर सी उठी, साथ ही उन्हें दोबारा चक्कर भी आ गए थे और वे एक बार फिरसे फर्श पर बैठ गई थीं।

मगर थोड़ी देर बाद, वे एक बार फिर उठीं और उन्होंने अनिमेष की तलाश करने के लिए हरिद्वार जाने का फैसला कर लिया। तैयार तो वे हो ही चुकी थी, और उनका ड्राइवर

भी आ गया था । तो वे हरिद्वार जाने का दृढ़ संकल्प करके कहां से निकली और अभी कार में बैठने वाली थी कि तभी... जैसे उन्हें कुछ याद आया... और वे " " अभी आयी ! " कह कर वहाँ से वापस अंदर गई और फिर एक बड़ा सा ताला लेकर अपने मंदिर वाले कमरे के पास पहुंच गई।

उस मंदिर के दूसरी तरफ बीचो बीच में भगवान श्रीकृष्ण की संगमरमर की बहुत सुंदर प्रतिमा स्थापित थी इसमें भगवान श्री कृष्ण हाथ में मुरली लिए हुए मनमोहक अंदाज में खड़े हैं और मुस्कुरा रहे हैं।

गायत्री देवी सीधा भगवान की मुर्ति के सामने पहुँची और भगवान से बोली- " भगवान तुमने आज तक मेरे साथ जो भी अच्छा बुरा किया मैंने चुपचाप सह लिया, कभी शिकायत नहीं की। यहां तक कि तुमने मेरे पति को मुझसे छीन लिया, मैंने तब भी सब्र कर लिया मगर अब... मेरे सब्र की और परीक्षा मत लो ! अगर मेरे बेटे अनिमेष को कुछ हुआ तो मैं जी नहीं पाऊंगी, मैं जीते-जी मर जाउंगी। मेरे सब्र की और
परीक्षा मत लो भगवान मेरे सब्र की और परीक्षा मत लो ! कहते-कहते वे रो ही जो पड़ी थी। वे फूट-फूट कर रोने लगीं और रोये ही जा रहीं थीं, रोएं ही जा रहीं थीं।"

मगर फिर उन्होंने अपने आंसू पोंछते हुए भगवान को चेतावनी देने के अंदाज में कहा-"भगवान ! अगर मेरे अनिमेष को कुछ हुआ तो... मैं तुम्हें भी चैन से नहीं रहने दूंगी। मैं जा रहीं हूँ तुम्हारे इस मंदिर पर ताला लगाकर और अब यह तभी खुलेगा जब... मेरा अनिमेष मुझे सही-सलामत मिल जायेगा ।"

कह कर गायत्री देवी झटके से उस मंदिर वाले कमरे से बाहर निकली और फिर उन्होंने उस कमरे को बंद करके उस पर बाहर से ताला लगा दिया।

क्रमश:

###

अब आगे क्या होगा ? क्या अनिमेष गायत्री देवी को जीवित मिल पायेगा ?

जाने के लिए पढ़ें प्रेम और भावनाओं में डूबी एक

हैरतअंगेज कहानी - 'वरदान' का अगला भाग ।